ज्ञान भरम टूटन लग्यौ, उद्धव भये उदास।।

उद्धवजी– हैं यह कहा देख रह्यौ हूँ। ये तौ ब्रज कौ कैसौ भयानक रूप है गयौ है। सब ब्रजवासी श्रीहीन है गये है। गइया आर्द्धस्वर सौ रम्हाए रही है। लता पता सब सूख गई हैं। यमुना हू किनारौ छोड़ गई है। विचित्र दशा। अब मैं यहाँ तौ आये गयौ किन्तु नन्दालय कौ मार्ग कौन सौ पुछूं। अरे इन ब्रजांगनान सौ पुछूं। अरे ओ ब्रजनागरियों हमें नन्दभवन कौ अतौ पतौ बताय सकौ का।

सखी सपना–अजी तुम कौन हौ, कहाँ सौ आये हौ और नन्दबाबा ते तुम्हें कहा काम है।

उद्धव–अरे देखवे में तो बड़ी भोरी लागे है पर जीभ बड़ी चल रही है कतरनी सी। अरी कृष्ण कौ सखा हू मैं सखा। नाम है मेरौ उधौ। कृष्ण कौ सन्देसौ लायो हूँ। कृष्ण की पाती लैके आयौ हूँ।

सखी सपना–अजी हमारे कन्हैया कौ सन्देसौ बिनकी पाती लाये हो, कैसी बाबरेन की सी बातन ने कर रहे हौ।

उद्धव–चौं कहा बात है गई।

सखी सपना–अरे उद्धव जी कन्हैया की पाती तो तब लायी जाये जब कहीं हमसौ दूर होए। कन्हैया तौ यही हैं। कन्हैया तौ ब्रजरज के कण–कण में हैं तिहारे ऑख होए तो देख लेओ। ये देखौ या रज में स्वेत कण तौ श्री राधा हैं और श्याम कण कन्हैया हैं। उधौ आपकू दिखायी पड़ रह्यौ है कि नाए। बोलो तो सही होंठन नै खोलो तौ सही या मोह्ड़े में का दही जमा कै बैठे हो।

उद्धव–हॉ हॉ दिखायी पड़ रह्यौ है। एक कण सफेद है एक कण श्याम है। अरी गोपी कैसी बातन नै कर रही है। कहीं जड़ पदार्थ में या चैतन्य कौ दर्शन है सकै। अर्थात् जड़ में कहीं कन्हैया दीख सकैं।

सखी सपना–अजी उद्धव जी! ये महिमा तौ या ब्रज की ही है। यहाँ तौ चैतन्य ही नहीं यहाँ तौ जड़–पदार्थ हू बोले हैं।

वृन्दावन के वृक्ष कौ मरहम ना जाने कोई
डार–डार और पात पै श्री राधे–राधे होए।

उद्धव–अरी गोपी तू तौ बड़ी चतुर जान पड़ै है। तैने अपनी भोरी–भारी बातन में मोए तौ भटकाय दियौ। मैं तौ तेरे जोड़ू हाथ तोते तौ मैं बात ही नाए कर सकूं हूँ। अरी ब्रजगोपी कहा आप मोए नन्दभवन पहुंचाय सकौ।

सखी प्राची–अजी उद्धव जी! आपकू कहा बताउँ बताते भये मेरौ हियौ भर–भर आवै है। पर आप पूछ रहे हौ तौ आपकू बताउँ। देखौ उद्धव जी ये जो सामने सौ जल की धारा बही आय रही है याकू कोरी जल की धारा मत समझियौं। ये मइया यशोदा और नन्दबाबा के अंखियन की अश्रुधारा है। जा दिन सौ वो निष्ठुर, निर्दयी कन्हैया या ब्रज कू छोड़ कै गयौ है वाही दिना ते बिन दोनों के नैन पनारे की नाई बह रहे हैं। और उद्धव आपकू कहू मार्ग पूछवे की आवश्यकता नहीं है बस याही अश्रुधारा के सहारे सहारे चले जाओ अपने आप नन्दालय पहुंच जाओगे।